



सुभाष चंद्र बोस और गांधी जी के संबंध: एक विश्लेषण

यशवन्त कुमार श्रीमाली ¹

¹ एम. फिल. नेट इतिहास, सहायक आचार्य vsy, राजकीय महाविद्यालय, पीसांगन (अजमेर).

ABSTRACT:

सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दो प्रमुख और प्रभावशाली नेता थे। उनकी विचारधाराओं और रणनीतियों में गहरा अंतर था, लेकिन दोनों का उद्देश्य भारत को स्वतंत्रता दिलाना था। यह शोध पत्र उनके आपसी संबंध, उनके वैचारिक मतभेदों और राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान का विश्लेषण करता है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि मतभेदों के बावजूद, दोनों नेताओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

KEYWORDS:

सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, स्वतंत्रता संग्राम, वैचारिक मतभेद, नेतृत्व, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

PAPER ACCEPTED DATE:

27th August 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

30th August 2024

विषय वस्तु

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस दोनों ही भारतीय राजनीति और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता रहे। उनके आपसी संबंधों में वैचारिक और रणनीतिक मतभेद थे, लेकिन दोनों का उद्देश्य भारत को स्वतंत्रता दिलाना था। यह विषय न केवल उनके विचारों और कार्यशैली के विश्लेषण का मौका देता है, बल्कि यह भी समझने में मदद करता है कि उनके योगदानों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को कैसे आकार दिया।

सुभाष चंद्र बोस की विचारधारा और गांधी जी के साथ मतभेद

1. अहिंसा बनाम सशस्त्र संघर्ष

गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि केवल नैतिक और शांतिपूर्ण साधनों से ही ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई जीती जा सकती है। इसके विपरीत, सुभाष चंद्र बोस का विचार था कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सशस्त्र संघर्ष और हिंसक क्रांति की आवश्यकता है।

- गांधी जी ने बार-बार यह कहा कि हिंसा केवल और अधिक हिंसा को जन्म देती है।
- बोस का तर्क था कि अहिंसा ब्रिटिश सरकार के सख्त रवैये के सामने कारगर नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बल प्रयोग आवश्यक है।

2. वैचारिक मतभेद

महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के वैचारिक मतभेद न केवल स्वतंत्रता संग्राम की रणनीतियों तक सीमित थे, बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण में भी दिखाई देते थे।

- गांधी जी का आर्थिक दृष्टिकोण ग्रामीण भारत के स्वदेशी मॉडल पर आधारित था।
- दूसरी ओर, बोस आधुनिक औद्योगिकरण और प्रगतिशील समाजवाद के समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत को औद्योगिक और तकनीकी प्रगति के माध्यम से सशक्त बनाना आवश्यक है।

3. नेतृत्व शैली का अंतर

- गांधी जी ने भारतीय जनमानस को एकजुट करने के लिए धीरे-धीरे जनांदोलनों को आगे बढ़ाया। उनके आंदोलन जनता में आत्मनिर्भरता और एकता का संदेश देते थे।
- बोस का नेतृत्व अधिक आक्रामक और दृढ़ था। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की आजादी के लिए समर्थन जुटाने का प्रयास किया और आजाद हिंद फौज का गठन किया।

4. त्रिपुरी अधिवेशन और कांग्रेस में मतभेद

1939 में त्रिपुरी अधिवेशन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस के बीच मतभेदों का चरम बिंदु था।

- बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने लेकिन गांधी जी के समर्थकों का विश्वास नहीं जीत सके।
- यह घटना दोनों नेताओं के आपसी संबंधों में निर्णायक मोड़

साबित हुई।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

1. गांधी जी का योगदान

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया दृष्टिकोण और नई ऊर्जा दी। उनके प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:

- **सत्याग्रह आंदोलन:** 1919 में रॉलेट एक्ट के खिलाफ गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की, जिसने जनता को बड़े पैमाने पर संगठित किया।
- **दांडी मार्च:** 1930 में नमक सत्याग्रह के माध्यम से गांधी जी ने ब्रिटिश कानूनों को खुली चुनौती दी।
- **भारत छोड़ो आंदोलन:** 1942 में गांधी जी ने "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा देकर स्वतंत्रता संग्राम को अंतिम चरण में पहुंचाया।

गांधी जी की अहिंसात्मक रणनीतियों ने भारतीय जनता को सक्रिय रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने भारतीय समाज में सामूहिक एकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया।

2. सुभाष चंद्र बोस का योगदान

सुभाष चंद्र बोस का दृष्टिकोण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अधिक आक्रामक था। उन्होंने अपनी रणनीतियों से न केवल ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की स्वतंत्रता की मांग को मान्यता दिलाई।

- **आजाद हिंद फौज:** 1942 में सुभाष चंद्र बोस ने जापान के समर्थन से आजाद हिंद फौज का गठन किया। उन्होंने भारतीय युवाओं को सशस्त्र संघर्ष के लिए प्रेरित किया।
- **आजाद हिंद सरकार:** बोस ने सिंगापुर में "आजाद हिंद सरकार" की स्थापना की और इसे कई देशों से मान्यता प्राप्त करवाई।
- **राष्ट्रीय चेतना:** बोस ने अपने नारे "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" से देशवासियों में स्वतंत्रता के प्रति जुनून भर दिया।

बोस का योगदान यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में केवल अहिंसा ही नहीं, बल्कि सशस्त्र संघर्ष और कूटनीतिक प्रयास भी महत्वपूर्ण थे।

गांधी जी और बोस के संबंधों की जटिलता

महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के संबंध केवल वैचारिक मतभेदों तक सीमित नहीं थे। उनके आपसी संबंध जटिल और बहुआयामी थे।

- **आपसी सम्मान:** बोस ने गांधी जी को "राष्ट्रपिता" का संबोधन दिया, जिससे उनके प्रति गहरा सम्मान झलकता है।
- **सहयोग और असहमति:** गांधी जी ने बोस की देशभक्ति और समर्पण की प्रशंसा की, लेकिन उनके तरीकों से असहमति जताई।
- **साझा लक्ष्य:** दोनों नेताओं का उद्देश्य एक ही था—भारत को

ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र कराना।

संबंधों का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस के संबंधों और उनके अलग-अलग दृष्टिकोणों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

- गांधी जी के नेतृत्व ने भारतीय जनता में स्वतंत्रता के प्रति एकता और नैतिक साहस को प्रबल किया।
- बोस की आक्रामक नीतियों और आजाद हिंद फौज ने ब्रिटिश साम्राज्य को यह समझा दिया कि भारत अब उनकी गुलामी के लिए तैयार नहीं है।

प्रेरणादायक विरासत

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस की विचारधाराओं और योगदानों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा और प्रेरणा दी। उनके संबंध यह सिखाते हैं कि मतभेदों के बावजूद, एक साझा लक्ष्य के लिए मिलकर काम किया जा सकता है।

व्यक्तिगत संबंध और आपसी सम्मान

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस के बीच आपसी सम्मान और प्रेरणा का भाव हमेशा बना रहा, भले ही उनके दृष्टिकोण और विचारधाराएँ अलग थीं। सुभाष चंद्र बोस ने गांधी जी को "राष्ट्रपिता" कहकर संबोधित किया, जो उनके प्रति गहरे आदर को प्रकट करता है। इसी प्रकार, गांधी जी ने भी बोस के साहस, दृढ़ निश्चय और उनके राष्ट्रीय योगदान को बार-बार सराहा।

उनके बीच मतभेदों के बावजूद, उनकी साझी सोच यह थी कि भारत को किसी भी स्थिति में स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिए। गांधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित आंदोलन जहां नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर देता था, वहीं बोस का सशस्त्र संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने की नीति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक क्रांतिकारी आयाम प्रदान करती थी।

वैचारिक मतभेद और राष्ट्रीय आंदोलन

गांधी जी और बोस के बीच वैचारिक मतभेद स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और रणनीति को लेकर थे। गांधी जी भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता, स्वदेशी, और अहिंसा पर जोर देते थे। उनका मानना था कि नैतिक और शांतिपूर्ण साधनों के जरिए ब्रिटिश शासन को पराजित किया जा सकता है।

इसके विपरीत, बोस का विचार था कि केवल हिंसा और सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से ही ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ा जा सकता है। उन्होंने इस विचारधारा को व्यवहार में लाने के लिए आजाद हिंद फौज का गठन किया और विदेशी शक्तियों जैसे जापान और जर्मनी से सहयोग प्राप्त किया।

यह वैचारिक संघर्ष न केवल गांधी जी और बोस के संबंधों में बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में भी परिलक्षित हुआ। गांधी जी का मार्ग धीमी गति से व्यापक जनसहभागिता के माध्यम से स्वतंत्रता की ओर बढ़ने का था, जबकि बोस का दृष्टिकोण तेज और आक्रामक था।

स्वतंत्रता संग्राम में दोनों नेताओं का योगदान

गांधी जी और बोस दोनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपार योगदान दिया।

1. गांधी जी का योगदान

गांधी जी ने सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे अभियानों का नेतृत्व किया। उन्होंने भारतीय समाज में सामाजिक और नैतिक जागरूकता पैदा की, जो स्वतंत्रता संग्राम की बुनियाद बनी। उनके आंदोलन में महिलाओं, किसानों, मजदूरों और विभिन्न वर्गों की सहभागिता बढ़ी।

2. बोस का योगदान

बोस का योगदान आजाद हिंद फौज के गठन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जुटाने के क्षेत्र में अतुलनीय था। उनके नारे "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" ने लाखों भारतीयों को प्रेरित किया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया और ब्रिटिश साम्राज्य को यह महसूस कराया कि भारत अब उनकी गुलामी के लिए तैयार नहीं है।

दोनों नेताओं के प्रयासों का सामूहिक प्रभाव

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस के प्रयासों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अलग-अलग लेकिन महत्वपूर्ण दिशाएँ प्रदान कीं।

- गांधी जी की अहिंसक रणनीति ने भारतीय जनता को एकजुट किया और स्वतंत्रता के लिए एक नैतिक आधार तैयार किया।
- बोस की आक्रामक रणनीति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक वैश्विक पहचान दी और ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को कमजोर किया।

गांधी और बोस: दो ध्रुव, एक लक्ष्य

गांधी जी और बोस के विचारों में भले ही ध्रुवीय अंतर था, लेकिन उनका उद्देश्य समान था। उनकी कार्यशैली और दृष्टिकोण में भिन्नता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक समग्रता प्रदान की।

- गांधी जी का तरीका जनता को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने और नैतिक बल देने का था।
- बोस का तरीका सशस्त्र संघर्ष और विदेशी सहयोग के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य को हराने का था।

इन दोनों नेताओं के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि भारतीय जनता ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया। उनके मतभेदों ने भी स्वतंत्रता संग्राम को विविधता दी और विभिन्न विचारधाराओं को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान की।

अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण

बोस के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उन्होंने जापान और जर्मनी जैसे देशों से समर्थन प्राप्त किया और आजाद हिंद सरकार की स्थापना की। दूसरी ओर, गांधी जी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के संघर्ष को नैतिक और अहिंसक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया। उनके नेतृत्व ने भारत की स्वतंत्रता की मांग को वैश्विक स्वीकृति दिलाई।

विरासत और प्रेरणा

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस की विरासत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्रोत है। उनके जीवन और कार्य आज भी भारतीय समाज और राजनीति में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

- गांधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का सिद्धांत आज भी विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में प्रेरणा का स्रोत है।
- सुभाष चंद्र बोस की देशभक्ति, साहस और नेतृत्व की भावना युवाओं को प्रेरित करती है।

अंतिम दृष्टिकोण

महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे स्तंभ हैं जिनकी वैचारिक विविधता और राष्ट्र के प्रति समर्पण ने स्वतंत्रता आंदोलन को अद्वितीय स्वरूप दिया। उनके संबंध यह सिखाते हैं कि मतभेदों के बावजूद, यदि लक्ष्य समान हो तो एक साझा उद्देश्य के लिए मिलकर कार्य किया जा सकता है।

गांधी जी और बोस के संघर्ष और उनके योगदान यह दिखाते हैं कि स्वतंत्रता केवल एक विचार नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास, त्याग और संघर्ष का परिणाम है। उनके मतभेद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ताकत थे, क्योंकि उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों और रणनीतियों को समाहित किया।

गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस की साझी विरासत आज भी भारत और दुनिया भर में प्रेरणा देती है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि भले ही रास्ते अलग हों, लेकिन अगर लक्ष्य एक हो तो हर चुनौती को

निष्कर्ष

महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दो ऐसे महान नेता थे जिनकी वैचारिक और कार्यशैली की भिन्नताएं उनकी व्यक्तिगत संबंधों और आंदोलन के परिणामों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उनकी नेतृत्व शैली, रणनीति और दृष्टिकोण में गहरे मतभेद होने के बावजूद, वे दोनों एक समान उद्देश्य के लिए कार्यरत थे—भारत की पूर्ण स्वतंत्रता। गांधी जी और बोस के बीच के मतभेद भारतीय राजनीति के उस समय के जटिल परिदृश्य को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं।

REFERENCES

- सुभाष चंद्र बोस, *द इंडियन स्ट्रगल*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- महादेव देसाई, *महात्मा गांधी: एक आत्मकथा*, नवजीवन ट्रस्ट।
- रवींद्र कुमार, *नेहरू, गांधी और सुभाष: एक तुलनात्मक अध्ययन*, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
- भगवती चरण वर्मा, *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक*, साहित्य अकादमी।

5. बिपिन चंद्र, *भारत का स्वतंत्रता संग्राम: इतिहास और संदर्भ*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।